Journal Global Values, Vol. XV, No. Special Issue 2024, ISSN: (P) 0976-9447, (e) 2454-8391, Impact Factor 8.888(SJIF)
https://doi.org/10.31995/jgv.2024.v15iS1.013

नायिकाओं का विवेचन दशरूपक के दृष्टि से

आराधना दीक्षित
अंस्सिटेंट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
आर0बी0डी0 महिला महाविद्यालय,
बिजनौर
Email: aaradhanadixitupadhyay@gmail.com

सारांशः

संस्कृत साहित्य में नायिका को लेकर किसी भी स्वतन्त्र मत का प्रतिपादन नहीं हुआ है। जब से रस मार्ग की प्रतिष्ठा हुई तभी से रसों में श्रृंगार रस को अधिक महत्त्व मिला। इसलिए श्रृंगार के आलम्बन के रूप में नायक, नायिका का चित्रण किया गया। नायिका भेद के विषय में अनेक आचार्यों भरतमुनि, विश्वनाथ, हेमचन्द्र, रूय्यक, धनञ्जय आदि का मत प्रमुख रूप से निरूपित किया गया है।

धनञ्जय के अनुसार हम नायिका के भेद और उनकी आठ अवस्थाओं को जानेंगे। जहाँ सभी आचार्यों ने नायिका के तीन भेद उत्तमा, मध्यमा, अधमा बताया वहीं धनञ्जय ने स्वकीया परकीया साधरण स्त्री के रूप में भेद किया है। स्वकीया भी तीन प्रकार की होती है। मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा नायिका की स्वाधीनपतिका आदि आठ अवस्थायें हुआ करती है। नायक से समान नायिकाओं की सहायिकाऐं होती हैं।

मुख्य शब्दः

स्वकीया, परकीया, मुग्धा, प्रगल्मा, स्वाधीनपतिका, प्रोषितप्रिया, अभिसारिका, वयः, धीरा, अधीरा, धीराधीरा।

Reference to this paper should be made as follows:

आराधना दीक्षित

नायिकाओं का विवेचन दशरूपक के दृष्टि से

Vol. XV, Sp. Issue
Article No. 13,
pp. 095-100

Online available at
https://anubooks.com/journal/journal-globalvalues

DOI: https://doi.org/10.31995/jgv.2024.v15iS1.013

नाटक के प्रमुख भेदक तत्व वस्तु नेता रस में जिस प्रिकार कथावस्तु और रस का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। ठीक उसी प्रकार नायिका की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। नाट्य के प्रधान तत्वों ने वह अपना विशिष्ट स्थान रखती है। नायिका के अभाव में नाटक सर्वथा निरस प्रतीत होता है।

नायक के समान ही नायिका भी प्रधान पात्र होती है। जो नाटक को अग्रसर करती हुई अन्त तक ले जाती है, परन्तु नाट्यशास्त्र और काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में नायिका के विषय में बहुत प्रकाश नहीं डाला गया है।

नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में स्त्री के उद्भव के विषय में बताया गया है कि जब भरतमुनि ने तीन वृत्ति भारती, सात्वती, आरभटी को निर्मित करने के पश्चात ब्रह्मा से वृत्तियों को अवगत कराने गये तब ब्रह्मा जी उन्हें कैशिकी वृत्ति को इसमें जोड़ने का आदेश दिया। और कहा कि कैशिकी वृत्ति के लिए जो आवश्यक तत्व है वो मुझसे माँग लो। तब भरतमुनि ने कैशिकी वृत्ति के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा कि पितामह कैशिकी वृत्ति विलास से युक्त होती है। जो रङ्मच में सुन्दर वस्त्रों से विभूषित एवं श्रृंगार रस से उत्पन्न होती है। इसलिए कैशिकी वृत्ति का रमणी (नायिका/स्त्री) के सिवा पुरुष के द्वारा उसका अभिनय एवं प्रयोग किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं हो सकता। भरतमुनि के इस प्रकार कहने पर ब्रह्मा जी कौशिकी वृत्ति के अनुरूप 24 अप्सराओं की सृष्टि की।

'मञ्जुकशी सुकेशी च् मिश्र केशी सुलोचनाम्
सौदामिनी देवदत्तां देवसेनां मनोरमाम्
सुदती सुन्दरी चैव विदग्धा विपुला
तथा सुमाला सन्तति चैव सुनन्दा सुमुखी तथा
मागधीमर्जुनी चैव सरलां केरलां धृतिम्
नन्दा सपुष्कलां चैव कलमां चैव में ददौ।'[1]

इन 24 अपस्राओं को भरतमुनि ने नाट्य शिक्षा देकर इन्हें प्रवीण बनाया। दशरूपककार धनञ्जय ने अपने दशरूपक के द्वितीय अध्याय में नायक के विवेचन के बाद नायिका के स्वरूप, प्रकार, अवस्थाओं पर प्रकाश डाला है। उनके अनुसार नायक के सामान्य गुणों से युक्त नायिका होती है 'तद्गुणा नायिका'[2]

नाट्यशास्त्र मे ंसभी प्रकार के नायिकाओं के तीन भेद किये गये हैं। किन्तु दशरूपक में स्वकीया के ही तीन भेद बताए गए।

'मुग्धा मध्या प्रगल्भेति स्वीया शीलाजर्वादियुक्'[3]

स्वकीया नायिका शील सरलता से युक्त होती है। वह मुग्धा मध्या प्रगल्भा तीन प्रकार की होती है। यहाँ शील का अर्थ है सुन्दर आचरण वाली अतः स्वकीया नायिका पतिव्रता, कुटिलता से रहित, लज्जावती और अपने पति की सेवा में निपुण होती है। उदाहरण के लिए सीता स्वकीया नायिका है।

स्वीकीया के प्रथम भेद मुग्धा नायिका के विषय में धनञ्जय बताते है कि मुग्धा नायिका वो होती है जो नवीन वय वाली, नवीन काम वाली और रतिक्रीड़ा में वाम होती है, क्रोध करने में कोमल होती है अर्थात् शीघ्र ही प्रसन्न हो जाती है। मुग्धा नायिका को आंग्ल भाषा में इनोसेन्ट कहते हैं। उदाहरण के लिए शकुन्तला एक मुग्धा नायिका है।

''मुग्धा नववयः कामा रतौ वामा मृदुः क्रुधि''[4]

मध्या नायिका के वर्णन में दशरूपककार कहते है कि जिसमें यौवन और काम का उदय हो चुका है और जो मोहान्त रति में समर्थ हो वह मध्या नायिका है।

''मध्योद्यद्यौवनानङ्गा मोहान्तसुरतक्षमा।''[5]

मध्या नायिका के भी तीन भेद होते है। 1. धीरा 2. अधीरा 3. धीरा–धीरा

धीरा उत्प्रास के साथ, धीराधीरा वक्रोति, आसुओं और ताने से तथा अधीरा कोप के साथ अश्रुपूर्वक कठोर शब्दों से अपने अपराधी प्रियततम को फटकारती है।

मुग्धा और मध्या के व्यवहार में यही भेद दिखाया गया है कि मुग्धा सर्वथा लज्जाशील होती है, परन्तु मध्या लज्जाशील नहीं होती। यदि हम प्रगल्भा नायिका की बात करें तो वह लज्जारहित होने के साथ–साथ विदिग्ध भी होती है। इस प्रकार स्वकीया नायिका के कुल 13 भेद हो जाते हैं।

मुग्धा (केवल एक प्रकार)

मध्या (धीरा, अधीरा, धीरा धीरा) X (ज्येष्ठा, कनिष्ठा)

प्रगल्भा (धीरा, अधीरा, धीराधीरा X (ज्येष्ठा, कनिष्ठा)

उदाहरण –वांसवदत्ता (ज्येष्ठा,) रत्नावली (कनिष्ठा)

स्वकिया नायिका के भेद प्रभेद के बाद परकीया नायिका को जानेगें। परकीया नायिका के लिए धनञजय कहते है कि परकीया नायिका दो प्रकार की होती है कन्या तथा विवाहिता नायक के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष की स्त्री परकीया नायिका होती है। परकीया नायिका भी दो प्रकार की होती है प्रथम वह जो कन्या है द्वितीय वह जो विवाहिता है।

लोक में अन्य नायक की परिणीता भी किसी अन्य पुरुष से प्रेम करने लगती है। ऐसा देखा गया है संस्कृत के मुक्तक काव्यों में ऐसे प्रेम प्रसगों वर्णन किया गया है, यद्यपि इस प्रकार का प्रेम वर्णन श्रृंगाराभाषा के अन्तर्गत आता है रस के नहीं। साहित्यशास्त्र की यह मर्यादा भी रही है कि जहाँ श्रृंगार प्रधानरस हो उस श्रृंगार का आश्रय परकीया को नहीं बनाया जा सकता है। यदि हम कन्या की बात करें तो कन्या अविवाहित है तथापि उसे अन्य स्त्री परकीया नायिका कहा जाता है, क्योंकि वह अपने पिता के अधीन होती है। इसलिए उस कन्या या परकीया नायिका में गुप्त रूप से प्रेम की आवृत्ति होती है। कन्या नायिका पहले तो वह पिता, बन्धु इत्यादि से प्राप्त नहीं की जा सकती। यदि प्राप्त भी हो जाती है तो दूसरे द्वारा बाधा पहुँचाने का भय रहता है। जैसे भवभूति के नाटक 'मालतीमाधव' में मालती में माधव का (दूसरों की रुकावट के कारण) 'रत्नावली' में सागरिका में वत्सराज का (वासदत्ता के भय के कारण) प्रेम

गुप्त रूप से प्रवृत्त होता है।

स्वकीया, परकीया नायिका का विवेचन जानने के बाद हम जानेंगे की साधारण स्त्री किसे कहते हैं और साधारण स्त्री की रूपकों में क्या भूमिका रही। साधारण स्त्री को यदि हम सामान्य भाषा में जाने तो गणिका (वैश्या) को साधारण स्त्री कहा जाता है।

जिसके कुछ व्यवहार पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है

''साधारण स्त्री गणिका कला प्रागल्भ्यधौर्त्ययुक्''[6]

साधारण स्त्री के व्यवहार अन्य शास्त्रों में विस्तार पूर्वक बताया गया है कि वह छिपकर प्रेम करने वाली, सुखपूर्वक धन प्राप्त करने वाली, अज्ञानी, स्वच्छन्द, अहंकारी और व्यापारी को यदि वह धनवान हो तो उसके प्रति अनुरक्ता है यदि वह धनहीन हो तो निःस्वान माता के द्वारा निकलवा देती है। गणिका के विषय में कहा गया है कि प्रहसन से भिन्न अन्य रूपकों में हम गणिका को नायक में अनुरक्त दिखा सकते हैं। जैसे मृच्छकटिकम् में वसन्तसेना चारूदत्त में अनुरक्त थी। परन्तु जब नायक दिव्य पुरुष या राजा हो तो हम गणिका को नायिका के रूप में चित्रित नहीं कर सकते है। स्वकीया नायिका के लक्षण में आदर्शवादिता की झलक मिलती है परन्तु परकीया और साधारण स्त्री के वर्णन यथार्थवादिता की बात की जाती है। मुग्धा, मध्या और साधारण स्त्री नायिकाओं के विवेचन के बाद दशरूपककार ने नायिकाओं की आठ अवस्थाएँ बताई है। नायिका होना भी नारी की अवस्था है।

स्वकीया इत्यादि नायिकाओं की आठ अवस्था इस प्रकार है।

1. स्वाधीनपतिका 2. वासकसज्जा 3. विरहोत्कण्ठिता 4. खण्डिता 5. कलहान्तारिता
6. विप्रलब्धा 7. प्रोषितप्रिया 8. अभिसारिका

स्वाधीनपतिका – जिस नायिका का पति समीप में स्थित है तथा उसके अधीन है तो वह नायिका प्रसन्न रहती इसलिए वह स्वाधीन पतिका नायिका कही जाती है।

''आसन्नायत्तरमण हृष्टा स्वाधीनभर्तका''[7]

वासकसज्जा – जब नायिका अपने प्रिय के आने की आषा से अपने को बड़े ही प्रसन्नता के साथ सजाती सवारती है तो वह वासकसज्जा कहलाता है।

''मुदा वासकसज्जा स्वं मण्डयत्येश्यति प्रिये''[8]

विरहोत्कण्ठिता – प्रिय के देर से आने पर अत्यधिक व्याकुल रहने वाली विरहोत्कण्ठिता कही जाती है।

''चिरमत्यव्यलीके तु विरहोत्कण्ठितोन्मनाः''[9]

खण्डिता – जो अन्य नायिका के सहवास से विकृत जानकर नायक पर ईर्ष्या से कलुषित हो जाती है वह खण्डिता नायिका है।

ज्ञातेऽन्यासङ्गविकृते खण्डितर्श्याकशायिताा।[10]

कलहान्तारिता – वह नायिका जो क्रोध के वशीभूत होकर अपने नायक का तिरस्कार करती है फिर पश्च्याताप करती है।

''कलहान्तरितातऽमर्शाद्विधूतेऽनुषयार्तियुक्''[11]

विप्रलब्धा – प्रियतम के निश्चित समय पर न आने के कारण अत्यधिक अपमानित होने वाली विप्रलब्धा कहलाती है।

प्रेषिता प्रिया – जिस नायिका का पति किसी अन्य कार्य से दूर देश मे ंस्थित होता है वह प्रोषित प्रिया कहलाता है

''दूरदेशान्तरस्थे तु कार्यतः प्रोषितप्रिया''[12]

अभिसारिका – वह नायिका जो काम से पीड़ित होकर नायक के पास स्वयं जाती है अथवा नायक को अपने पास बुलाती है वह अभिसारिका है।

ये आठो अवस्थाएँ स्वकीया नायिका की है साधारण और परकीया नायिका की कोई अवस्था नहीं होती है। लेकिन कुछ अवस्थाएँ सभी की हो सकती है।

जैसे – विरहोत्कण्ठिता, अभिसारिका तथा विप्रलब्धा ये तीनों अवस्था केवल परकीया नायिका की हो सकती है क्योंकि उनका प्रिय उनके अधीन नहीं होता। इनको छोड़कर अन्य कोई भी अवस्था नहीं हो सकती है।

परन्तु 'साहित्यदपर्ण' के दृष्टि में दशरूप का यह मत उचित नहीं है कारण यह की स्वाधीनपतिका शब्द में पति का अर्थ प्रियतम है और पिता या पति के घर में कोई परपुरुष विश्वसनीय समझ लिया जाता है तो वह निरन्तर समीप रह सकता है तब कन्या या परोढ़ा स्वाधीन पतिका कहला सकती है। इस प्रकार आठ नायिकाओं में अन्त की छः नायिकाएं विरहोत्कण्ठिता खण्डिता, कलहान्तरिता विप्रलब्धा प्रोषित प्रिया और अभिसारिका चिन्ता, विश्वास, खेद, अश्रु, वैवर्ण्य ग्लानि भूषणहीनता से युक्त होती है जब की प्रारम्भ की दो नायिकाएँ स्वाधीनपतिका और वासकज्जा क्रीड़ा उज्ज्वलता और प्रसन्नता से युक्त होती है। अतः हमने नायिका के सभी भेदों प्रभेदों, अवस्थाओ ंको जाना, नाटक में जितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका नायक की होती है उतनी ही महत्त्वपूर्ण भूमिका, नायिका की भी होती है। जो श्रृंगार रस का आलम्बन होती है।

अतः संस्कृत साहित्य में सर्वप्रथम नायिका का विवेचन अग्निपुराण में श्रृंगार रस के आलम्बन के रूप में किया गया, भरतमुनि ने भी अपने नाट्यशास्त्र में सभी नाटकीय पात्रों का विवेचन किया है। संस्कृत के अनेक ग्रन्थों जैसे 'साहित्य दपर्ण', 'दशरूपक', 'काव्यानुशासन' 'रसमंञजरी' इत्यादि ग्रन्थों में नायिका के भेद प्रभेद अवस्थाओं पर प्रकाश डाला गया है। परन्तु दशरूपक में नायिकाओं के विभाजन में बहुत अन्तर है। ज्यादातर ग्रन्थों में नायिकाओं के उत्तमा, मध्यमा, अधमा जबकि दशरूपक में नायिकाएँ तीन प्रकार की होती है 1. स्वकीया 2. परकीया, साधारण नायिकाओं का वर्गीकरण उनकी परिपक्वता, नायको के साथ उनके सम्बंध तथा उनकी विभिन्न भावनात्मक स्थितियों पर किया गया है। दशरूपक का आंधार नाट्यशास्त्र है, परन्तु नायिका विवेचन में धनञज का मत भिन्न च्च्वबिल्कुल है।

संदर्भ

1. सं. प्रो. ब्रजमोहन चतुवेदी नाट्यशास्त्रम् (भरतमुनि) विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली 2014, पृष्ठ सं. 99
2. सं. श्रीनिवास शास्त्री, दशरूपकम् (श्री धनञजयविरचितम्) साहित्य भण्डार, मेरठ 2015 पृष्ठ सं. 134
3. सं. श्रीनिवास शास्त्री, दशरूपकम् (श्री धनञजयविरचितम्) साहित्य भण्डार, मेरठ 2015 पृष्ठ सं. 135
4. सं. श्रीनिवास शास्त्री, दशरूपकम् (श्री धनञजयविरचितम्) साहित्य भण्डार, मेरठ 2015 पृष्ठ सं. 136
5. सं. श्रीनिवास शास्त्री, दशरूपकम् (श्री धनञजयविरचितम्) साहित्य भण्डार, मेरठ 2015 पृष्ठ सं. 139
6. सं. श्रीनिवास शास्त्री, दशरूपकम् (श्री धनञजयविरचितम्) साहित्य भण्डार, मेरठ 2015 पृष्ठ सं. 148
7. सं. श्रीनिवास शास्त्री, दशरूपकम् (श्री धनञजयविरचितम्) साहित्य भण्डार, मेरठ 2015 पृष्ठ सं. 152
8. सं. श्रीनिवास शास्त्री, दशरूपकम् (श्री धनञजयविरचितम्) साहित्य भण्डार, मेरठ 2015 पृष्ठ सं. 153
9. सं. श्रीनिवास शास्त्री, दशरूपकम् (श्री धनञजयविरचितम्) साहित्य भण्डार, मेरठ 2015 पृष्ठ सं. 154
10. सं. श्रीनिवास शास्त्री, दशरूपकम् (श्री धनञजयविरचितम्) साहित्य भण्डार, मेरठ 2015 पृष्ठ सं. 154
11. सं. श्रीनिवास शास्त्री, दशरूपकम् (श्री धनञजयविरचितम्) साहित्य भण्डार, मेरठ 2015 पृष्ठ सं. 155
12. सं. श्रीनिवास शास्त्री, दशरूपकम् (श्री धनञजयविरचितम्) साहित्य भण्डार, मेरठ 2015 पृष्ठ सं. 156